भक्त हृदय के उद्‌गार

मैंने तो तुझे बार बार, प्रणाम कर दिया।
मैं तो बार बार बार, तोरे चरण चढ़ लिया।।

अब तू जाने मुझे चाहे प्रभु, राह दिखाओ न दिखा।
मैं तो तेरे चरणों में, अर्पित ही हो लिया।।

कर्म न जानूँ धर्म न जानूँ, न जानूँ मैं शास्त्र विधि।
साधन नहीं कोई भजन नहीं, पर माँगूँ तुझसे मैं सिद्धि।।

क्या मुझको मूढ़ कहोगे नाथ, बिन जाने द्वार पे आई हूँ।
साधन तू ही यह ज्ञान तू ही, राम यह जान के आई हूँ।।

अब तुम ही राह दिखा देना, प्रभु तेरी शरण में आई हूँ।
जग के गीत भुला दो मुझको, जो जन्म जन्म मैं गाई हूँ।।

तेरी ध्वनि सुनूँ मैं निस दिन, उसी ध्वनि में गाऊँ मैं।
जिस ताल में तेरा गान बजे, संग पायल ही बजाऊँ मैं।।

इतनी बिनती सुन लो राम मेरे, जग बंधन से मुक्त करा दो मुझे।
मैं चाकर तुहार भई हूँ राम, अब अपनी चेरी बना लो मुझे।।

- परम पूज्य माँ

(15.8.1959)

प्रार्थना शास्त्र नं. - 1/14

अनुक्रमणिका

१. **भक्त हृदय के उद्‌गार**

३. **..आपने काली को करमों वाली बना लिया!**
श्रीमती पम्मी महता

७. **'..करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि..'**
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

११. **निर्बल के बल राम!**
सुश्री छोटे माँ

१५. **'नित्य मुक्त रे होना था, ..बहु जाल बिछाते जाते हो!'**
'मुण्डकोपनिषद्' में से

२०. **जिसका जन्म ही नहीं हुआ, वह मरेगा भी क्या?**
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्‌भगवद्‌गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन

२५. **मन रेखा बधित या स्वरचित**
अर्पणा प्रकाशन 'ज्ञान विज्ञान विवेक' में से

३०. **सत्संग किसे कहते हैं!**
पूज्य माँ के सत्संग पर आधारित

३३. **जीवन में प्यार के कुछ कण.. इतने अनमोल हैं जो कभी नहीं भूलते!**
श्रीमती पम्मी महता

३६. **अर्पणा आश्रम से समाचार**

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा जून २०१९ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

..आपने काली को करमों वाली बना लिया!

श्रीमती पम्मी महता

हे श्री हरि माँ, आप मेरे जीवन में सदा बाबस्ता रहें! ज़िन्दगी के कुछ पल बड़ी ही ख़ामोशी में भी निकले और पीड़ा में भी गुज़रे.. लगता था, जैसे ज़िन्दगी ठहर सी गई हो। आपके बिना अधूरापन लगता.. वे पल बहुत ही अधूरे लगते। न जाने, ऐसा मुक़ाम क्यों आया? हैरतज़दा होती और आपका दामन मन ही मन पकड़े रहती.. क्योंकि आपने अपने से मुझे विलग होने ही कहाँ दिया!

कभी आपकी मेहरबानियों को गिनती, तो कभी अपने आन्तर की दरिद्रता को देखती.. कैसे कैसे आपने मुझे निकाला! इस वक्त उन्हीं पलों को याद करी करी अपनी ख़ुशनसीबी को नम आँखों से देखी देखी स्वयं को बड़ी ही नसीबन मान कर धन्य धन्य महसूस कर लेती और दुआ करती, 'यारब, यहाँ से आप ही लिवा ले चलिए!'

बड़ी ही ख़ामोशी से यहाँ से निकलने के लिए मन ही मन प्रार्थना करती, 'हे ईश यहाँ से आप ही राह दिखाइये, क्योंकि आप ही आप मेरे सहाई रहे हैं और आप ही हाथ पकड़ कर मुझे लिवाये लिए जा रहे हैं!'

हृदय-पटल पर आपके क़दमों के निशां मुझे निराश नहीं होने देते थे। कभी लगता, 'कहीं आपसे विलग तो नहीं हो जाऊँगी?' फिर आशा का दामन पकड़ लेती, 'नहीं! नहीं!'

हे श्री हरिनाथ, मेरे क़दमों को कभी भी बहकने नहीं देना, क्योंकि बहुत ही युगों के बाद आप कृपा करी मुझे अपने क़रीब लाये हैं! इस असीम अनुग्रह के लिए नतःश्री बारम्बार होते हुये आप ही आपका धन्यवाद करती चली जाती हूँ!

आपकी करुण-कृपा का दिव्य प्रसाद.. इसे अपने हृदय से कभी विलग न होने दूँ! कैसी निराली शोभा व आपकी करुण-कृपा की जानिब ही यूँ जागृत हो पाई! हे श्री हरि परम वन्दनीय परम पूज्य माँ, आप ने जीवन की परम सत्यता से इसे अवगत कराया.. आप श्री हरि माँ की वजुहात से ही आप में जागृत हो पाई। आपकी दिव्यता में व आपकी रोशनाई में ही आपको देख पाई। आप ही से आपकी दिव्य दृष्टि के भव्य दर्शन कर पाई.. दुनिया को देखने का मेरा नज़रिया ही बदल गया!

'मैं' का अस्तित्व ही धीरे धीरे जाने लगा.. जब इस सत्य को क़बूल पाई, क्योंकि इस सत्य से आप ही ने तो अवगत कराया; वरना जीव की बिसात ही कहाँ है कि इस सत्य को, इस परम सत्य को देख पाये व जान पाये! बहुत अद्‌भुत व प्यारी है आपकी प्रीत! इतनी विश्वासों की घनिष्ठता न होती तो कुछ भी नहीं बदलता। आप श्री हरि माँ ने मेरे जीवन में उस हर चीज़ पर अपना नाम लिख दिया.. जिसे देख कर आप ही आप याद आते वरना आपकी मेहर का यूँ सदक़ा न उतार पाती! सदा आप ही याद आते.. दिन-रैन आप ही याद आते..

आप श्री हरि माँ ने अपने नाम का प्याला पिला कर ही इस निमानी का चित्त निर्मल कर दिया। मेरा पहला प्यार बनी आने के लिए आप श्री हरि माँ का कोटि कोटि धन्यवाद! इतना निश्छल प्यार.. इतना शुचि व पावन प्यार.. आपके सिवा और किसी का हो ही नहीं सकता!

आप ही की तो मुहब्बत है जो सदा मेरे आंतर में सजीव रहती है! अपनी याद तो भूल ही जाती है! आपका प्यार ही आपकी यादों को हृदय में बसा कर इस हृदय को अपने ही रंग में रंग लेता है!

कहाँ यह मलिन मन, कालिमापूर्ण, जो अनजाने में ऐंठता ही रहा.. इस सत्यता से जब आपने मेरी मुलाक़ात करवाई तो पता चला, इसका तो कोई अस्तित्व ही नहीं है। यूँ ही इसे अपना कर जीव जगत स्वयं को मलिन करता जा रहा है।

हे श्री हरि नाथ, आप ही ने इस दलदल से अवगत भी कराया व यहाँ से निकाला भी आ कर.. आपने काली को करमों वाली बना लिया! देखिये न, कहाँ यह करमजली और कहाँ इसे करमों वाली बना लिया। धन्य हैं आप, हे श्री हरि नाथ, जो इसे अपने से

परम पूज्य माँ के साथ श्रीमती पम्मी महता एवं अर्पणा परिवार के अन्य सदस्य

सनाथ कर लिया व निज नाम से नवाज़ लिया। धन्य हैं आप व आप का कोटि कोटि धन्यवाद हे श्री हरि माँ!

आपने नाम की महिमा गा गा कर उस दिव्य नाम से नवाज़ लिया! हृदय-वीणा को नाम की महिमा सुना सुना कर इसे नाम से नवाज़ लिया व हृदय-वीणा को कितने प्यार से झंकृत कर लिया उस दिव्य नाम से! धन्य हैं आप व कोटि कोटि धन्यवाद, आपने अपने से इसे मिला दिया! आपसे मिल कर, आपकी दिव्य दृष्टि से देख कर आंतर बाहर को, धन्य धन्य हो गई हूँ।

हे श्री हरि माँ, मैं तो आपसे कृतार्थ हो गई। कितना अपना आप जान आपने इसकी आंतर की मलिनता को wash off कर दिया.. तभी तो आप प्रेम स्वरूप के भव्य दर्शन कर पाई व अपने आप से भी मुलाक़ात कर पाई! धन्य हैं आप! अतीव विनम्र भाव से सीस झुका कर आपके श्री चरणन् में विनम्र नमन करती हूँ। तभी तो आप ही आप याद आते हैं - कैसे हृदय-वीणा की तारों को बदल कर स्वयं से झंकृत कर दिया। आपकी महिमा अपरम्पार है हे श्री हरि माँ!

आपने अपने आशीर्वादों से जैसे इस निमानी को ढाँप लिया! हे माँ, आपने कुछ भी तो नहीं बचा कर रखा.. सभी देते ही चले गए आप। इतनी प्यारी आपकी लूट, आपकी

नज़रेइनायत, जितना ही शुक्रिया करूँ, कम है! आपने सभी कुछ लुटा दिया मुझ पर.. ऐसी लूट में, हे ईश, आप से आपकी कनीज़ ने पाया ही पाया है, कुछ भी तो नहीं खोया.. क्योंकि देने वाले आप स्वयं दाता थे! आपकी देन इतनी प्यारी थी कि जो आंतर में समाती ही चली गई।

आप श्री हरि माँ ने ही मुझे अपने समेत अपना सभी कुछ बाँटना सिखाया..

सभी के लिए जीने का राज़ सिखाया..

और वह भी कितने प्यार से सिखाया..

"मुझसे ले जाया करो और सभी में बाँटती रहना.." हे श्री हरि नाथ अपने से सनाथ करी आप कैसे इसे लिवाये लिए जा रहे थे। हे ईश, मेरे करणाधार आप ही हैं। मुझे आप के सिवा कौन किनारा देगा!

हर शै आप ही से शुरू होती और आप पे ही जा ख़त्म होती.. आरम्भ भी आप, किनारा भी आप.. कैसा आश्वासन दे दिया आपने! आपने कहा, 'सभी मुझी पे छोड़ दे.. मैं स्वयं अपने धाम ले चलूँगा!' वाह सद्गुरु वाह! धन्य हैं आप! कैसे कैसे इस अपनी कनीज़ को आश्वासन पे आश्वासन दिये जाते व लिवाये लिये जाते। आप ने इस क़दर आस बँधाई कि कहीं कोई शुबहा आंतर में रहने ही नहीं दिया.. जैसे आप ही आप चले जा रहे हैं मेरे लिए और मैं आपके पाछे पाछे चलती ही चली चलूँ! कैसे कैसे यह आपके क़दम मुझे लिवा ही ले जायेंगे.. यह अंध विश्वास नहीं, यह तो आप श्री हरि माँ के वह मीठे बोल हैं जो चल कर आपने मुझे प्रसाद रूप में दिये हैं! मेरा हृदय-आँचल कैसे प्यार से भरते ही चले जा रहे हैं!

ऐसा परम सौभाग्य आप ही से हे माँ प्रभु जी मिल सकता है। ईश्वर करे, इस प्रसाद को निज हृदय-दामन में समेट कर चली चलूँ। इसी आशीर्वाद से नवाज़ी ही चलती चलूँ! बहुत शुक्रगुज़ार हूँ आपकी, जिन्होंने इसे निज से नवाज़ लिया! ईश्वर करे, गति व सद्गति ही मेरे जीवन की परम हक़ीक़त बनी रहे! आमीन.

हे श्री हरि नाथ आप ही आपसे सनाथ रहूँ युगों युगों तक! यही आशीर्वाद भरा हाथ आपका मेरे सर पर रहे.. और मैं मन, वचन व काया से आपकी इसी रहगुज़र पर चलती ही चलूँ! आंतर इस सत्यार्थ प्रकाश से ही भरा रहे और आप जो भी दें वही बाँटती रहूँ! मेरे हाथ बन करी आप ही दिलाते चलें.. जो असीम कृतज्ञ भाव से जहाँ आप लगायें लगी रहूँ। यही करबद्ध प्रार्थना भी है मेरी और अनुनय-विनय भी!

हरि ओइम् तत्तसत

तू ही तू इक तू ही तू ❖

'..करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि..'

अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

गतांक से आगे ~

श्लोकु

पवणु गुरु पाणी पिता माता धरति महतु।
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु।
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि।
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि।
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि।
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि।।

शब्दार्थ : *वायु अर्थात् प्राण गुरु और जल पिता है, सृष्टि को पैदा करने वाली धरती बड़ी माता है। दिन तथा रात्रि, दोनों खिलावी - खिलावा हैं अर्थात् धाय हैं, जिन के साथ समस्त संसार खेल रहा है। जीवों के अच्छे और बुरे कर्मों को धर्मराज की हजूरी (अध्यक्षता) में पढ़ा जाता है। अपने अपने*

किये कर्मानुसार कोई भगवान के निकट और कोई उससे दूर होता है। जिन्होंने जीवन में उस परमात्मा के नाम का स्मरण किया है, वह जीवन की कमाई सफल कर गये हैं। हे नानक! उनके मुख उजले (तेजवान) हैं। उनके साथ और भी अनेक सृष्टि मुक्त हुई है (अर्थात् उनका संग करके उनके पदचिन्हों पर चलने वाले कई भक्तगण भी तर गये हैं)।

पूज्य माँ :

पवन गुरु जल है पिता, धरती माँ है महान।
दिन रैन दाई खिलावे, नाटकवत् भये जहान।।१।।

पाप पुण्य कर्मन् को नित, धर्म तुला तोले जाये।
अपने अपने कर्म की राह, कोई पास या दूर हो जाये।।२।।

नाम कुमाई जिस करी, वह महाधनी हो जाये।
पावन उज्ज्वल आप भये, कई अन्य संग तर जायें।।३।।

आदेश मालिक का बस इतना, गर समझ आ जाये।
सन्देस उसका मिल जाये, मन जीते जी तर जाये।।४।।

आदेश दिया मेरे मालिक तूने, हर रूप हर भेस में तू।
पूर्ण एको हो तू ही, मन जीते मिल जाये तू।।५।।

समस्त जग तुम्हारा है, हर भाव नाम है तू।
आदेश तुम्हारा इतना है, झुकूँ देखूँ सभी में तू।।६।।

सच में बसे सत् कर्म करूँ, सच है सब ही है तू।
पाप पुण्य सब कर्मन् की, तुला भी एक है तू।।७।।

अपने अपने कर्म कहो, पर कर्म कराये तू।
कर्ता तू अखण्ड है तू, इक ओंकार है तू।।८।।

पवन कहूँ मैं ज्ञान को, पर ज्ञान भी है तू।
जल कहूँ पिता, मन को कर्मपति कह दूँ।।९।।

जलवत् बहे यह मन मेरा, पूर्ण जग रच दे।।
नाटक जो कल को भये, यह मन ही कर्म कर दे।।१०।।

धरती माँ पे बीज पड़े, यह तन ही उपज पड़े।
गुरु का ज्ञान जो मन माने, यह नाटक ख़त्म होये।।११।।

पाप पुण्य की तुला यह धर्म, पर तुला है तू।
जिस पे नज़र तेरी हो मौला मेरे, वा हृदय वास करे बस तू।।१२।।

एक ओंकार सब हुकम तेरा, माने रह जाये तू।
हुकम अदूली गर 'मैं' न करे, इक गुरु रहे बस तू।।१३।।

गुण गाये पर वह गाये, मेहर करे जहाँ तू।
सब पाप मिटें विकार मिटें, नज़र करे जहाँ तू।।१४।।

श्रवण करे जो नाम तेरा, हृदय बसे वा तू।
भक्त भये तेरे चरण का, विकास करे वा तू।।१५।।

जो माने तेरी बात को, वह जाने क्या तू।
तू सदा सलामत निरंजन तू, नित निराकार है तू।।१६।।

बिन गुण कर्म में आये कहो, हुकम न जान सके।
जो कर्मन् से नहीं तुले, वह भक्ति न कर सके।।१७।।

अपने को कर्ता माने, वह तुमसे दूर रहे।
तू कहे तू कर्तार, आदेश मन सीस धरे।।१८।।

तोरी नज़र मिले मन पावन हो, नज़र मिले तो तरे।
तोरी रहमत जहाँ होये, वह तेरा हो जाये।।१९।।

ज्ञान असीम है तू कहे, कर्म का फल भी मिले।
कर्म में धर्म जो मिले, तब ही तेरा ज्ञान मिले।।२०।।

नित्य आनन्द में वास करे, चित्त भी शुद्ध भये।
फिर तेरे कर्म जीवन भयें, वाणी तेरी ही भये।।२१।।

नाम से भरपूर भये, तेरा हुकम ही बाक़ी रहे।
तेरी कृपा जहाँ हो मेरे मौला, वहाँ नित्य आनन्द रहे।।२२।।

पर सब समझी मैं यह समझी, गर तेरा नाम मिले।
महाधनी वह हो जाये, जहाँ करुणा तेरी बसे।।२३।।

इसीलिये तो कहते हैं :-

करुणापूर्ण दयानिधान, पावनकर तू पाप विमोचक।
क्षमा स्वरूप तू प्रेम निधान, निर्मलकर मल विमोचक।।२४।।

अशरण की शरणा एको नाम, दे दे मालिक इतना वरदान।
हर पल चरण में बैठ करी, केवल लूँ मैं तेरा नाम।।२५।।

मैं ज्ञान की बातें क्या जानूँ, जहान की बातें क्या जानूँ।
मैं नाम की बातें क्या जानूँ, मैं तो कुछ भी न जानूँ।।२६।।

इस पल बैठी इतना कहूँ, मेरे मालिक दे दे अपना नाम।
हर पल लूँ मैं तेरा नाम, बस चरण पड़ी के लूँ मैं नाम।।२७।।

एक है तू इक ओंकार, मैं ओंकार भी क्या जानूँ।
अद्वैत है तू अचिन्त्य रूप, मैं ऐसी बातें क्या जानूँ।।२८।।

अखण्ड तू अनादि तू, आदि अनादि क्या जानूँ।
मैं तो चरण में तेरे बैठी हूँ, तू सत् स्वरूप मैं यह जानूँ।।२९।।

तेरा कहा ही सब होये, तेरे हुकम में ही अब सब होये।
मेहर तेरी गर हो जाये, जन्म सफल मेरा तब होये।।३०।।

इस पल इतना ही माँगूँ, मेरे मालिक और मैं क्या जानूँ।
कुछ भी अब मैं न जानूँ, इतना ही मैं अब जानूँ।।३१।।

तेरे हुकम में ही अब नित्य रहूँ, वहाँ नाम मिले तब जानूँ।
नाम ही दे इतना माँगूँ।।३२।।

रहमत तेरी हो जाये, प्रेम में मन मेरा खो जाये।
अपना नाम भूले मुझको, तेरे चरण में जा के सो जाये।।३३।।

धाम मेरा अब और नहीं, तेरे चरण धाम मेरा हो जायें।
प्रेम विभोर यह हो करके, चरण धूलि बनी सो जाये।।३४।।

इतना माँगूँ मालिक मेरे, अज चरण में बैठी यह माँगूँ।
और कछु न आये मुझे, मैं तुमसे तुमको ही माँगूँ।।३५।।

मालिक मेरे बादशाह, मेरे नानक तुमसे यह माँगूँ।
ज्ञान की बातें न समझूँ, मैं तो केवल नाम तेरा माँगूँ।।३६।।

ओ मालिका! मेरे मालिका! मेरे मालिका!
ओ मेरे मालिका!

(समाप्त)

❖ ❖ ❖

निर्बल के बल राम!

सुश्री छोटे माँ द्वारा यह लेख अर्पणा पुष्पांजलि मार्च १९८४ के अंक में से लिया गया है

जीवन में प्रायः यह बात सुनते आये हैं कि निर्बल के बल राम होते हैं! परन्तु कभी इस पर ध्यान लगा कर नहीं देखा!

बल को जीवन में किस प्रकार से समझें?

बल का प्रयोग कैसे करें?

कैसे चरणों में विश्वास बढ़े?

जिनके बल राम होते हैं, वे सच ही दृढ़ निश्चयी और धैर्यवान होते हैं तथा हर काज में उनकी निरन्तरता होती है। समर्पण का बल कोई कैसे समझ सकता है? समत्व और धैर्य का बल समझना भी अतीव कठिन है। परन्तु इस बल का परिणाम तो देखें!

रामायण में 'शबरी' के जीवन का संदर्भ आता है। परम पूज्य माँ ने अनेकों भक्तों की कथाएँ बच्चों को सुनाईं और उन में से कई भक्तों के जीवनों का नाट्य रूपांतरण भी किया गया। इन में से एक नृत्य नाटिका 'शबरी' भी थी।

शबरी का जीवन हमारे सम्मुख इसी बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। एक अकेली कन्या का भगवान की खोज में घर से जाना.. रास्ते में कितनी कठिनाइयाँ आई होंगी.. वह उनसे घबराई नहीं.. उसने तो पीछे मुड़ करके भी नहीं देखा होगा.. तो यह किस का बल था? परम पूज्य ने इसके लिए कहा -

"प्रेम भक्ति में खोये जो, पतझड़ लगे बहार।
पत्थर कोमल शैय्या भये, जंगल भये फुलवाड़।।

कवच पहरा जिस नाम का, दुःख भी उससे घबराये।
महा भयंकर परिस्थिति, अनुकूल कहें बन जाये।।"

नाम ही 'शबरी' का बल था। उसने अपना लक्ष्य निश्चित कर लिया था और वह ही उस का बल बनता गया। राहों में कठोर से कठोर परिस्थितियाँ भी उसे छू न सकीं। जंगल में वह मतंग ऋषि के आश्रम के पास ही अपनी कुटिया बना कर रहने लगी। वहाँ पर वह ऋषि के साथ साथ अन्य आश्रमवासियों के भी नित्य काज करने लगी। आश्रम में रहने वाले ज्ञानी जनों से उसे कई बार अपमान भी मिलता.. परन्तु वह उसे अपमान ही नहीं लगता। उन्हें वह यही कहती कि यदि आपको कहीं कोई कमी दिखाई देती है तो मैं उसे सुधार लेती हूँ। उसने कभी यह नहीं कहा कि मैं तो आपके लिये इतने काज करती हूँ और आप लोग मेरा अपमान करते हैं।

कैसा पावनी मन होगा! देखने वालों को तो लगा कि वह बहुत कुछ सहन कर रही है.. परन्तु उसके लिये यह सहज स्वभाव था। कौन जाने, उसका बल तो स्वयं राम ही थे! यह याद करते ही मन गद्‌गद् हो जाता है, सच ही शबरी धन्य है। आओ, हम भी भगवान की शरण में जाकर उनसे बल माँगते हैं।

सर्वप्रथम हम देखें कि निर्बल का बल क्या है?

जो प्रेम करते हैं उनका बल स्थूल नहीं होता। उनका बल तो भगवद् गुण होते हैं। करुणा, दया और क्षमा का बल देखने में बहुत निर्बल होता है। सहनशक्ति और मौन का बल भी देखने में बहुत निर्बल होता है। यह बल ही तो दिव्य शक्ति है। यह बल जीव को अमरत्व दिला देता है। महाभक्त बना देता है। पुरुष से पुरुषोत्तम बना देता है। यह बल ही जीव को अखण्ड आनन्द दे सकता है और नित्य तृप्त कर सकता है। यही बल जीव को गुणातीत और स्थितप्रज्ञ बना सकता है।

यह बल ही सबसे प्रेम करना सिखला देता है और सबके लिये वरण योग्य बना देता है। वास्तव में यही बल संसार का केवलमात्र आसरा है। देखने में निर्बल सा दिखने वाला बल हमें असुर से इनसान तथा इनसान से देवता और देवता से भगवान बना देता है।

इसके विपरीत जो अभिमान का बल है वह तो दूसरे के मिटाव की बात करता है

परम पूज्य माँ, पूज्य छोटे माँ एवं परिवार के अन्य सदस्य

और दूसरे के झुकाव की बात करता है। अपने बल का गुमान करने वाले भगवान के बल को क्या समझेंगे? वह तो भगवान से द्वेष करते हैं। हमें तो यह देखना है कि भगवान को जहान किन गुणों से पहचानाता है।

अब उन्हें भी देख लें..

भगवान के प्राकट्य का प्रमाण भगवान का जीवन होता है। उनके जीवन की दिव्यता सभी दैवी गुणों से सुसज्जित होती है। आसुरी सम्पदा वाले भगवद् गुणों से रहित होते हैं। वह भगवद् गुण वालों को कुचलते हैं। उनसे घृणा करते हैं व भगवद् गुणों का हनन करते हैं।

आसुरी सम्पदा वाले कर्त्तव्य तो जानते ही नहीं। जहाँ कर्तव्य होता है और जहाँ उन्हें झुकना होता है, जहाँ उन्हें दूसरे की बात सहनी होती है, वहाँ यह लोग दोषारोपण करते हैं और क्रोध करते हैं। वहाँ ज्ञान बखान करके अपने आपको दोष विमुक्त कर लेते हैं। आसुरी सम्पदा वाले झूठे सिद्धान्तों का आसरा लेकर दूसरों को कलंक लगाते हैं और अपने को श्रेष्ठ मानते हैं।

कर्त्तव्य तो सर्वप्रथम अपने परिवार में, अपने से बड़ों तथा बच्चों और नाते-बँधुओं के प्रति होता है। आसुरी लोग अपने ही स्वार्थ में अँधे होकर अपनों का ही नामोनिशान मिटाते हैं। वह अपनों को गिराते हैं। अपनों से ही नाता तोड़ते हैं और उन्हें दबाना चाहते

हैं। वह भगवान के गुणों को अपने में आने ही नहीं देते क्योंकि वह स्वयं कर्त्तव्य कर नहीं सकते, इसलिये दूसरा, जो कर्त्तव्य करते हुए उन्हें उनकी त्रुटि दर्शाता है.. उससे वह द्वेष करते हैं।

उनका कर्त्तव्य यदि कोई निभा दे तो वह उसे नित्य बैरी मानते हैं। उस पर व्यर्थ कोई न कोई अर्थ मढ़ देते हैं। किसी का मान हर लेना, दूसरों की निंदा करना, उन्हें बदनाम करने का प्रयत्न करना तथा अपनी दुष्टता दूजे पर मढ़ना.. असुरत्व का सहज गुण है। यही तो उसका बल है। दया, क्षमा, धैर्य और सहानुभूति जैसे शब्द तो वह जानते ही नहीं। इनको तो वह निर्बलता का गुण मानते हैं। इसलिये यह गुण उनके हृदय में कैसे फूटेंगे?

याद रहे, वह तो असुर हैं। साधारणतया सहज में वह इनसान भी नहीं हैं। इनसानियत के गुण तो वे भूल ही जाते हैं।

भगवान के गुण उन्हें अपनी याद दिलायें.. उसे तो वह सहन भी नहीं कर सकते। इनकी वृत्ति हर पल दोष दर्शन करती है और उसी को अपना बल मानती है। यदि कोई इनसे प्यार करे तो उस पर मिथ्या भावना मढ़ते हैं अथवा उस पर कोई लोभ या चाहना मढ़ते हैं तथा उन्हें नीचे गिराने का प्रयत्न करते हैं। वह सद्‌गुणपूर्ण को पूर्ण यत्न से गिराते हैं और यह ही उनका बल है। इन्हीं के लिये भगवान कहते हैं कि ये लोग मेरे से द्वेष करते हैं, मुझे अपने में भी नहीं रहने देते और मैं जिस दूसरे में रहता हूँ, वहाँ भी मुझे कुचलने के यत्न करते हैं।

आजकल के वातावरण में आसुरी बल प्रधान है और वह बल इस प्रकार से बाह्यमुखता में प्रवृत हो रहा है कि चहुँ और घोर अंधकार छा रहा है। कोई भी तो नहीं जो आज सद्‌गुणों का संरक्षण करे.. यदि हम 'राम नाम सत् है' मानते हैं, वही बल है! हमें भगवान के गुणों की रक्षा ही करनी है। जीवन में राम गुण श्रेष्ठ मानकर उन्हीं का प्रयोग करना है।

यदि हम में राम नाम के प्रति श्रद्धा है तो हृदय में भगवद् गुणों को लाने का अभ्यास करेंगे। भगवद् गुणों को ही सत् मानने लगेंगे। यदि भगवान के लिये जीना है तो जीवन में प्रेम तथा करुणा का अभ्यास अनिवार्य है। यदि राम-नाम की सेवा करनी है तो नाम लेने वालों की नौकरी करो। भगवान से प्यार है तो सत् की रक्षा करो। यदि सत्संग भाता है तो मन में भगवद् गुणों के प्रति संग उत्पन्न करो। इससे बड़ी पूजा, भक्ति और नाम की महिमा क्या हो सकती है?

सत् पथिक का संरक्षण ही भगवान की पूजा है। सत् के कारण जो दुःखी है उनका संरक्षण करो। भगवान का यही संदेश है। यही आदेश है। यदि सत् पथ पे चलना है तो हमें वही करना है जो भगवान करते!

❖ ❖ ❖

'नित्य मुक्त रे होना था,
..बहु जाल बिछाते जाते हो!'

अविद्यायां बहुधा वर्तमाना वयं कृतार्था इत्यभिमन्यन्ति बालाः।
यत्कर्मिणो न प्रवेदयन्ति रागात् तेनातुराः क्षीणलोकाश्च्यवन्ते।।

- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - द्वितीय खण्ड, ९ श्लोक

शब्दार्थः

वे मूर्खलोग, 'उपासना रहित सकाम कर्मों में बहुत प्रकार से वर्तते हुए हम कृतार्थ हो गये', ऐसा अभिमान कर लेते हैं; क्योंकि वे सकाम कर्म करने वाले लोग विषयों की आसक्ति के कारण कल्याण के मार्ग को नहीं जान पाते; इस कारण बार बार दुःख से आतुर हो; पुण्योपार्जित लोकों से हटाये जाकर नीचे गिर जाते हैं।

तत्व विस्तारः

अज्ञान रति काम रति, समझें राह पे आ गये।
नाहक वह अभिमान करें, भूले वह भरमा गये।।१।।

बालक सम बुद्धू हैं यह, सत्त्व नहीं यह जाने हैं।
कर्मन् रति चाह बँधे, परम नहीं पहचाने हैं।।२।।

राग द्वेष सों आवृत यह, ज्ञान नहीं यह पाते हैं।
अज्ञान से था जन्म हुआ, अज्ञान में मर जाते हैं।।३।।

यज्ञ के फलस्वरूप यह, स्वर्गलोक तो पाते हैं।
पुण्य कर्मफल जब मिटें, महा पतन को पाते हैं।।४।।

कर्म अभिमान दम्भी यह, अहंकार ही बढ़ाते हैं।
मूढ़मति अल्प बुद्धि, ज्ञान वंचित रह जाते हैं।।५।।

जन्म मरण के चक्र सों, वह तो उठ नहीं पाते हैं।
मिथ्या संग में भ्रमित हुये, जन्मते और मर जाते हैं।।६।।

श्रुति उन्हें ललकारे है, कहे रे अब भी जाग उठो।
परम राह कोई और है, राहों में क्या भूले हो।।७।।

चाहना को मिटाना है, तुम चाहना पूर्त्ति चाहते हो।
अतृप्त स्वरूप तृप्त न हो, समिधा डारे जाते हो।।८।।

जीवन ज्वाला बुझावन् को, मोह घृत डारे जाते हो।
नित्य मुक्त रे होना था, बहु जाल बिछाते जाते हो।।९।।

कृतार्थ निज को मान गये, कहें बहु शुभ कर्म किये।
बालक इतना न जानें, सत्त्व सों अभी दूर रहे।।१०।।

बालक उनको कहते हैं, परम पथ के बाल हैं वह।
प्रथम स्तर पर क़दम धरा, शुभ की चाह बाह्य है वह।।११।।

श्रुति कहे ललकार के, आओ अब भी उठ आओ।
परम सत्त्व है बहु परे, आओ मन सों उठ आओ।।१२।।

मनोत्याग की जा पर वह, मनोविस्तार करते हैं।
चाहना पूर्ति चाहुक वह, अज्ञान में विचरते हैं।।१३।।

चाहना पूर्ति ही जन वह, श्रुति का पथ माने हैं।
विपरीत राहें उनकी हैं, पर नहीं वह जाने हैं।।१४।।

कुलवृद्धि जगवृद्धि, मनोवृद्धि वह चाहते हैं।
अखिल जगत अनुकूल भये, इतना ही वह चाहते हैं।।१५।।

सत्य ही है जो चाहें वह, वह तो निश्चित पाते हैं।
स्वर्गलोक में तुम कहलो, आपेक्षिक क्षण बिताते हैं।।१६।।

कर्मफल वेग जो ख़त्म हुआ, पुनः लौट वह आते हैं।
परम सत्त्व जो कर्म परे, उसको जान न पाते हैं।।१७।।

जग कोण सों मूढ़ नहीं, परम कोण सों कहते हैं।
जग तो उनको शुभ कर्मी, महान जन रे कहते हैं।।१८।।

साधक कोण सों इच्छा के, महा सागर में रहते हैं।
दूजे के लिये या अपने लिये, भाव उमड़ते रहते हैं।।१९।।

मनोमौन रे यूँ नहीं, परम वेत्ता जन कहते हैं।
परम तलक न पहुँच सके, गर भाव निरन्तर बहते हैं।।२०।।

मन परम में टिका नहीं, शुभ अशुभ अभी जाने हैं।
कर्म धर्मी अभी कर्ता है, कर्ता निज को माने हैं।।२१।।

सर्वारम्भ परित्याग ही, परम त्याग वह कहते हैं।
मनोमौन ही त्याग है, जिसकी श्याम रे कहते हैं।।२२।।

गीते ने कहा बार बार, अरे मनोमौन ही चाहिये।
उदासीन अरे कर्मन् के, प्रति तुम हो जाइये।।२३।।

गर समझे तू सेवा करे, अनेक योजन बनाया करे।
मन ही मन में चिन्तन हो, निज प्रयोजन उसे नहीं कहे।।२४।।

वृत्ति प्रवाह तो बहता है, योजन बनता रहता है।
यह करूँ मैं वह करूँ, नित्य ही तू कहता है।।२५।।

भावन् में रे बैठ करी, कहे आज मैं यह करूँ।
अपने लिये रे न सही, दूजे के ही लिये करूँ।।२६।।

यह पाऊँ यहाँ जाऊँ, यह फल फिर मैं पाऊँगा।
आप से ही या न सही, दूजे को ही बनाऊँगा।।२७।।

राम यहाँ पर कहते हैं, सूक्ष्म आसक्ति है यह।
जैसी भी हो जान लो, कर्मन् की भक्ति है यह।।२८।।

जब लग समझे कर सके, अभिमान अभी नहीं गया।
दूजे कारण भी रे कहें, कर्तृत्व भाव अभी नहीं गया।।२९।।

इतना दम्भ रे तुझमें है, तू समझे तू कुछ कर सके।
जग की सही पर तू माने, रेखा तू रे बदल सके।।३०।।

उपासना रहित रे कर्म यह है, उपासना सहित यह कर्म नहीं।।
साधक रे तू जान ले, तेरा तो यह धर्म नहीं।।३१।।

उपासना सहित रे कर्म लो, देख कहें किसे कहते हैं।
उपास्य में जो मग्न रहे, 'हम करें' नहीं कहते हैं।।३२।।

नित्य नाम में मग्न रहे, मन मग्न ही रहा करे।
प्रयोजन अपना नहीं, योजन नाम ही रहा करे।।३३।।

स्वतः धर्म जो तन करे, कोई कहे सो हो गया।
मन से नहीं अरे तन से ही, बाह्य कर्म है हो गया।।३४।।

जब बढ़ा उस सब किया, मन मग्न ही रे रहा।
इक पल भी वह नाम से, विचलित रे नहीं हुआ।।३५।।

खेल खिलाड़ी खेले है, अपने आपको न भूले।
कर्तृत्व भाव अरे कहाँ रहे, जब वह आपको न भूले।।३६।।

अद्वैत तत्व गर न जाने, राम राम ही कहा करे।
हर कर्म रे वह ही हो, रेखा राम जो कहा करे।।३७।।

भाव कबहुँ अब उठे ही न, कोई पल नहीं जब उठ सके।
नित्य निरन्तर राम कहे, अन्य भाव कब उठ सके।।३८।।

वह राम राम ही कहता है, हर स्वास बस नाम जपे।
तनोकर्म की बातें वह, कब किस पल रे सोच सके।।३९।।

कोई पूछे कहे राम प्रश्न, हस के उत्तर वह दे दे।
कोई कहे करो राम कर्म, सोच के कुछ न वह कर दे।।४०।।

पर नाम मग्न ही सब करे, उपासना सहित कर्म है यह।
साधक रे तू जान ले, भक्ति सहित धर्म है यह।।४१।।

अन्य कर्म अभिमान सों, पूर्ण ही रे होते हैं।
गर कहो करो और कर सको, अज्ञान में ही होते हैं।।४२।।

गर तू इतना जान ले, जो होना सो होयेगा।
निश्चित पथ है इस तन का, राम कहा ही होयेगा।।४३।।

आसक्ति रहित वह कर्म है, उदासीन वह कर्म है।
निरपेक्ष वह कर्म है, साधक का कर्म धर्म है।।४४।।

अन्य कर्म शुभ अशुभ, फल निश्चित ही लायेगा।
स्वर्गपुरी भी पा गया, निश्चित लौट ही आयेगा।।४५।।

कल्याण पथ गर पूछे तू, वह पथ बस रे राम ही है।
तेरा धर्म और कर्म, बस रे राम का नाम ही है।।४६।।

समझ सके तो समझ ले, मनोमौन ही धर्म है।
जान सके तो पुनः कहूँ, अहम् मौन ही धर्म है।।४७।।

हृदय स्थिति सत्त्व ही, साधक का इक कर्म है।
भाव रहित प्रज्ञा ही, एको तेरा धर्म है।।४८।।

वा का विधान है बना हुआ, जो कहे वह हो रहा।
कर्मन् में तू सोच भरी, अहम् रूप में खो रहा।।४९।।

भाव अहम् ही होता है, गर कहे करे यह अहम् ही है।
सोच अहम् की रे है, विचार जान अहम् ही है।।५०।।

गर अहम् का जानो, नितान्त अभाव है हो गया।
तब मना रे जान ले, भाव अन्त है हो गया।।५१।।

जड़ मूर्त है देख खड़ी, अपनी भान ही नहीं रही।
जिसने जो रे पूछ लिया, प्रतिझंकार वह हो गई।।५२।।

अपनी चाहना नहीं रही, जो राम चाहे वही करे।
चाहना बस इक राम है, जो राम कहा वही करे।।५३।।

निज तन भी न अपनाये, अपनत्व उपासना रहित रे है।
मन बुद्धि रे न अपनाये, अपनत्व अहम् सहित रे है।।५४।।

नयन नहीं कोई कर नहीं, कोई अंग ही अपना नहीं रहा।
मनोमौन रे हो गया, संग जो अपना नहीं रहा।।५५।।

कल्याण पथ रे यह ही है, अपना लक्ष्य रे यह ही है।
अब लग तो रे साधना में, हुआ प्रत्यक्ष रे यह ही है।।५६।।

नाम सों च्युत गर रे हुआ, जैसा भी रे फिर कर्म हुआ।
फल भोगे फिर लौट आये, परम नहीं यह धर्म हुआ।।५७।।

अपना धर्म बस इतना है, अहम् अभाव रे हो जाये।
मनमौन भाव रहित, चित्त स्वभाव रे हो जाये।।५८।।

राह भी नाम ही नामी की, लक्ष्य नामी साधक का।
मौन हुये वह परम मिले, लक्ष्य यही है साधक का।।५९।।

बस राम राम ही कर्म तेरा, तुम राम राम ही कहा करो।
राम ही है इक लक्ष्य तेरा, तू राम मग्न ही रहा करो।।६०।।

९-९-६१

❖ ❖ ❖

जिसका जन्म ही नहीं हुआ,
वह मरेगा भी क्या?

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/२१

भगवान कहते हैं अर्जुन से :

शब्दार्थ :

१. हे पृथा के पुत्र अर्जुन!
२. जो पुरुष इस आत्मा को, नाश रहित, नित्य, अजन्मा और अव्यय जानता है,
३. वह पुरुष कैसे किसी को मरवाता है,
४. और कैसे किसी को मारता है?

तत्व विस्तार :

ध्यान से समझ नन्हीं! भगवान फिर से आत्म तत्व का राज़ समझाते हुए कहते हैं कि जो यह जानता है कि :

क) आत्मा नाश रहित है।
ख) आत्मा का जन्म-मरण नहीं होता।
ग) आत्मा नित्य एकरस रहता है।
घ) आत्मा नाम रूप से परे है।
ङ) आत्मा परम चेतन अखण्ड स्वरूप है।

च) आत्मा निर्विकार है।
छ) आत्मा निर्गुण है।

वह आत्मा के साथ तद्रूप हुआ जीव अपने आपको क्या मानेगा, यह समझ ले।

१. वह तन की तद्रूपता छोड़ कर अपने आप को आत्मा जानेगा और तन के गुण नहीं अपनायेगा।
२. वह आत्मवान तनो सम्बन्धी कर्म कैसे अपना सकेगा।
३. वह आत्मवान तन को कभी भी स्थापित करना नहीं चाहेगा।
४. वह आत्मवान इन्द्रिय रसना के परिणामस्वरूप अपनी रुचि-अरुचि से भी संग नहीं करेगा।
५. वह आत्मवान इन्द्रिय रसना से भी संग नहीं करेगा।
६. वह आत्मवान स्पर्शमात्र से अनुभव में आने वाले विषयों से संग नहीं करेगा।
७. वह आत्मवान मन से संग नहीं कर सकेगा क्योंकि मन तो नित्य स्थूल विषयों को ही ध्याता था और इन्द्रिय राही वहाँ सम्पर्क पाता था।
८. अब तन के मालिक ने तन से नाता ही तोड़ दिया, तो तनो इन्द्रियों की ओर से ध्यान ही उठ जाता है। जब तन ही अपना नहीं रहा तब उसकी बुद्धि उसके अपने प्रति नितान्त उदासीन हो गई।
९. क्यों न कहें, जब वह अपने तन को भूल गया, तब उसकी बुद्धि भी अपने आप को भूल गई।
१०. तब वह आत्मवान अपने आपको भूल कर जीने लगा।

अब समझो नन्हीं!

क) जो अपने को तन मानता ही नहीं, वह तन के कर्म कैसे अपनायेगा?
ख) जो तन ही नहीं, वह कैसे किसी को मरवायेगा?
ग) जो तन ही नहीं, वह कैसे किसी को मारेगा?

यह मारना या मरवाना तन के राही होता है। यह युद्ध जो होने वाला है, यह तन का तन के साथ होगा। इस में आत्मा की सहयोगिता कहाँ हुई? इसमें आत्मा की तद्रूपता कहाँ हुई?

नन्हीं! जिसका जन्म ही नहीं हुआ, वह मरेगा भी क्या? वह तो सब करता हुआ भी कुछ नहीं करता।

नन्हीं! यह स्थिति प्राप्त करना अतीव कठिन है और अनेकों साधकगण इस स्थिति को पाने का यत्न करते हैं; किन्तु वह ज्ञान पर दृष्टि नहीं रखते हैं और विज्ञान को खो देते हैं। जब तक तुम अपने आप को पूर्ण रूप से भूल नहीं जाते, तब तक यह मान लेना कि तुम्हारी यह स्थिति है, एक भूल है। जब तन आपका नहीं होगा तो इसका जीवन में प्रमाण क्या होगा, इसे कुछ कुछ समझ ले।

क) तब आपके लिये आपका मान या अपमान कोई महत्व नहीं रखेगा। याद रहे, मान या अपमान तन का होता है, आपका नहीं।
ख) आप अपने तन की स्थापना के लिये कुछ भी नहीं करेंगे।
ग) आप के लिये बड़ा या छोटा काम कोई भी महत्व नहीं रखेगा।
घ) आप छोटे से छोटा काम भी उसी संलग्नता से करोगे, जिस संलग्नता से बड़ा कार्य करते हो।
ङ) आप किसी भी कार्य को अपनी हस्ती के नीचे नहीं समझेंगे।
च) आप किसी के लिये अपने मन में द्वेष नहीं रखेंगे।

छ) आप अपने तनो या मनो संरक्षण के लिये कभी कुछ नहीं करेंगे।
ज) फिर दूसरी ओर आप अपने सहयोगी तथा सहवासी गण के स्तर पर जाकर उन्हीं की सेवा करेंगे।
झ) जब आप से कोई प्रश्न करे तब आप अतीव स्पष्टवादिता से उत्तर देंगे, किन्तु यदि वह आपकी बात न माने तो आप बुरा नहीं मानेंगे।
ञ) आप नित्य अपना कर्तव्य करते रहेंगे। जिसके लिये आप सब कुछ करते हैं, वह चाहे आपको नित्य ठुकराता रहे।

नन्हीं! यह जीवन के थोड़े से पहलू कहे है तुम्हारे लिये। इन बातों से तुम्हें कुछ कुछ तो समझ आ गया होगा कि आत्मवान जीवन में कैसे होते हैं। जिनके जीवन में ऐसे गुण नहीं होते, वे आत्मवान नहीं होते। पूर्ण शब्द ज्ञान जान लेने से भी जीव आत्मवान नहीं बनता, जीवन में उसका प्रमाण चाहिये।

जो जीवन में आत्मवान होते हैं, वे तनत्व भाव से, भोक्तृत्व भाव से, कर्तृत्व भाव से, देहात्म बुद्धि से, संग और मम भाव से रहित होते हैं। वे जीवात्म भाव से भी परे होते हैं।

गर जीवन में यह स्थिति न हो तो अपने कर्मों के तुम ही ज़िम्मेवार हो। तब तुम यही यत्न करो कि नित्य कर्तव्य ही करते जाओ। शनैः शनैः तुम्हारा कर्तव्य का दायरा बदल जायेगा।

नन्हीं! आत्मवान लोगों के तद्रूप होकर उनकी स्थापना के लिये नित्य ही काज करते हैं और जब दूसरों के कष्ट दूर हो जाते हैं, तब वे मौन हो जाते हैं। जब तक दूसरे की उनको ज़रूरत होती है, तब तक वह उनका साथ देते हैं। जब दूसरे की ज़रूरत ख़त्म हो जाती है, तब वे उससे मानो दूर हो जाते हैं।

नन्हीं! जब तक दूसरे का काज नहीं ख़त्म हो जाता, तब तक ये लोग :

क) उसे अपना समय भी देते हैं।
ख) उसके कामों के लिये अनेक जगह उनके साथ भी जाते हैं।
ग) जैसी दूसरे की ज़रूरत हो, वैसा उससे व्यवहार भी करते हैं।
घ) प्यार, बातें और कर्म इत्यादि दूसरे के स्तर से करते हैं।
ङ) दूसरे की कार्य सिद्धि के लिये अनेकों बार उसे मनाते हैं और कभी उससे रूठ भी जाते हैं।
च) दूसरे की कार्य सिद्धि के लिये अनेकों बार उसी को डाँटते हैं, अथवा उसके पाँव पड़ जाते हैं।

किन्तु जब कार्य समाप्त हो जाये, तो ये ख़ामोश हो जाते हैं और किसी और के कामों में लग जाते हैं। जिसके काज ये पूर्व में करते रहे और जिसके काज अर्थ इतना समय देते रहे, तब वह इन्हें बेवफ़ा भी कह सकता है, क्योंकि कार्य सिद्धि के पश्चात् यह अन्य किसी की ज़रूरत की पूर्ति में लगे हुए अपने पहले 'मालिक' को समय नहीं दे सकते। यदि, जिसका कार्य सिद्ध हो चुका है, वह इनका साथ दे और दूसरों के कार्य सिद्ध करने में इनका हाथ बंटाये, तो उसका साथ निरन्तर बना रहे। क्योंकि साधारणतयः लोग यह नहीं करते, इस कारण आत्मवान भी बेवफ़ा से लगते हैं। फिर देखा गया है कि लोग बातें बनाते हैं और स्वयं दूर हो जाते हैं, परन्तु जब पुनः मुसीबत आ जाये तो फिर इनके पास आ जाते हैं।

नन्हीं! और लोग इनका साथ छोड़ देते हैं। परन्तु ये तो उनके लिये वैसे ही बने रहते हैं। यदि काज करवाने वाले

इनका साथ दें तो :

१. उन्हें भी अपना तन, मन तथा समय औरों के कार्य अर्थ देना पड़ेगा।
२. उन्हें भी अपना धन औरों के काज अर्थ देना पड़ेगा।
३. उन्हें भी अपनी सामर्थ्य औरों के अर्थ लगानी पड़ेगी।
४. उन्हें भी अनेकों बार झुकना पड़ेगा।
५. उनका भी अपमान होगा।

यह सब अचेत में ही सोच कर वे ऐसे लोगों का साथ छोड़ देते हैं और अनेकों बार उन पर दोष भी लगा देते हैं। लेकिन आत्मवान प्रतिरूप में दूसरों से अपने लिये कुछ नहीं चाहते। उनके अपने दृष्टिकोण से मानो उनका तन एक पत्थर की मूर्त है। जो उनकी शरण में आता है, वे उसकी मनोकामना पूर्ण करने का यत्न करते हैं तत्पश्चात् वे पत्थर की मूर्त के समान कुछ नहीं कहते। तब दूसरों की मर्ज़ी

परम पूज्य माँ व आभा भण्डारी

है। वे न ही किसी से द्वेष करते हैं, न ही किसी से राग करते हैं। ऐसे लोग सब करते हुए भी अपने को कर्ता नहीं मानते, नित्य अकर्ता ही मानते हैं।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।२२।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/२२

भगवान् अब एक साधारण सा दृष्टान्त देकर पुनः जन्म-मरण का राज़ कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र त्याग कर,
२. दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है,
३. वैसे ही, फटे पुराने शरीर को त्याग कर,
४. जीवात्मा दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है।

तत्व विस्तार :

भगवान अर्जुन की व्याकुलता, शोक और भय को मिटाने के लिये कहते हैं :

१. तू जन्म-मरण का भय न कर।
२. तू जन्म-मरण के कारण घबरा नहीं।
३. तू जन्म-मरण का ध्यान करके युद्ध से विमुक्त होने का यत्न न कर।
४. तू जन्म-मरण का ध्यान करके अपने कर्तव्य से विमुख न हो; अपना धर्म न छोड़।

अनादि काल में एक जीवन के कुछ वर्ष क्या अर्थ रखते हैं? जीवात्मा अनेकों शरीर और अनेकों रूप धारण करता है। वह अनेकों नामों से पुकारा जाता है और अनेकों आर्थिक व्यवसायों को ग्रहण करता है। जीव अनेकों कुलों में जन्म लेता है।

भगवान कहते हैं कि ज्यों तुम लोग फटे पुराने कपड़े उतार कर नये कपड़े पहन लेते हो, उसी प्रकार जीवात्मा पुराना शरीर छोड़ कर नया शरीर ग्रहण कर लेता है।

शरीरों का परिवर्तन होता ही रहता है। आज नहीं तो कल, ये शरीर मरेंगे ही! तो इन शरीरों की मृत्यु से क्यों घबराता है? ये तो आने जाने ही होते हैं।

फिर सोच नन्हीं! पिछले जन्म में तू कौन थी, इससे आज तुझे क्या फ़र्क़ पड़ता है? तू अमीर थी या ग़रीब थी, तू बुरी थी या भली थी, तू उच्च पद वाली थी या चाकर थी, आज तुझे क्या फ़र्क़ पड़ता है? किन्तु आज तेरी दुनिया कैसी है, इसका तो तुझे फ़र्क़ पड़ता है।

यदि आपका जीवन कर्तव्यपरायण होता, धर्मपरायण होता, यदि सत्‌गुण को आपने जहान में स्थापित किया होता, तो मेरी जान! यह दुनिया सुन्दर ही होती। भगवान कहते हैं इस दृष्टिकोण से भी देख ले, तो भी आततायियों से युद्ध करना उचित ही है। अन्यायी, पाप पूर्ण तथा लोभी गण तो अधर्म ही फैलायेंगे। गर राज्य करने वाले ही पतित लोग हों, तो जनता का पतन हो जायेगा।

इसलिये भगवान कहते हैं, 'तू घबरा नहीं। उठ! युद्ध कर।' नन्हीं! जैसा संसार छोड़ कर जाओगे, उसी में ही तो पुनः जन्म पाना है।

नन्हीं साधिका!

१. तू भी अपना कर्तव्य समझ ले।
२. तू भी अपने जीवन का धर्म समझ ले।
३. अपने कर्तव्य से विमुख होने के यत्न न कर।
४. ज्ञान को इतना विकृत न कर दे कि तू पंगु बन जाये।
५. ज्ञान के स्वरूप तथा रूप को समझ ले और उसे अपने जीवन में लाने के यत्न कर।
६. सत् पथिक जीवन से नहीं डरते।
७. सत् पथिक मृत्यु से नहीं डरते।
८. सत् पथिक दुःख से नहीं डरते।
९. सत् पथिक अत्याचारी के अत्याचार से नहीं डरते।
१०. सत् पथिक तो आन्तर बाह्य में नित्य सत् स्थापित करने में लगे रहते हैं।
११. वास्तव में आन्तरिक सत्यता का प्रमाण ही बाह्य असत् से युद्ध है।
१२. देवत्व कभी असुरत्व के सामने नहीं झुकता।
१३. देवता तो देवत्व के सामने झुकते हैं।
१४. देवता कर्तव्य के सामने झुकते हैं।
१५. देवता न्याय के चरण में झुकते हैं।
१६. देवता प्रेम के चरण में झुकते हैं।

नन्हीं! कहते हैं, भगवान स्वयं भक्तों के पीछे पीछे चलते हैं।

तू यह भी जान कि आत्मा अजर अमर है और तू आत्मा है, तन नहीं है। इसलिये अपना भय छोड़ दे। आत्मा कपड़ों की तरह शरीरों को धारण करता है और कपड़ों की तरह शरीरों को बदलता है, यह जानकर तू शोक और क्षोभ को छोड़ दे।

नन्हीं! पहले जीवन में :

१. दैवी गुण आने अनिवार्य हैं।
२. झुकाव सीखना अनिवार्य है।
३. सहिष्णुता अनिवार्य है।
४. निरपेक्ष भाव में जीना अनिवार्य है।
५. बुरा भला, दोनों के प्रति समभाव होने का अभ्यास अनिवार्य है।

साधक के लिये युद्ध का प्रश्न बाद में उठता है, वरना हर बार भड़क कर औरों से भिड़ जाओगे। आपके भड़काव की बुनियाद अहंकार होगा, प्रेम नहीं। आपके भड़काव की बुनियाद क्रोध होगा, न्याय नहीं। ❖

मन रेखा बधित या स्वरचित

अर्पणा प्रकाशन 'ज्ञान विज्ञान विवेक' में से

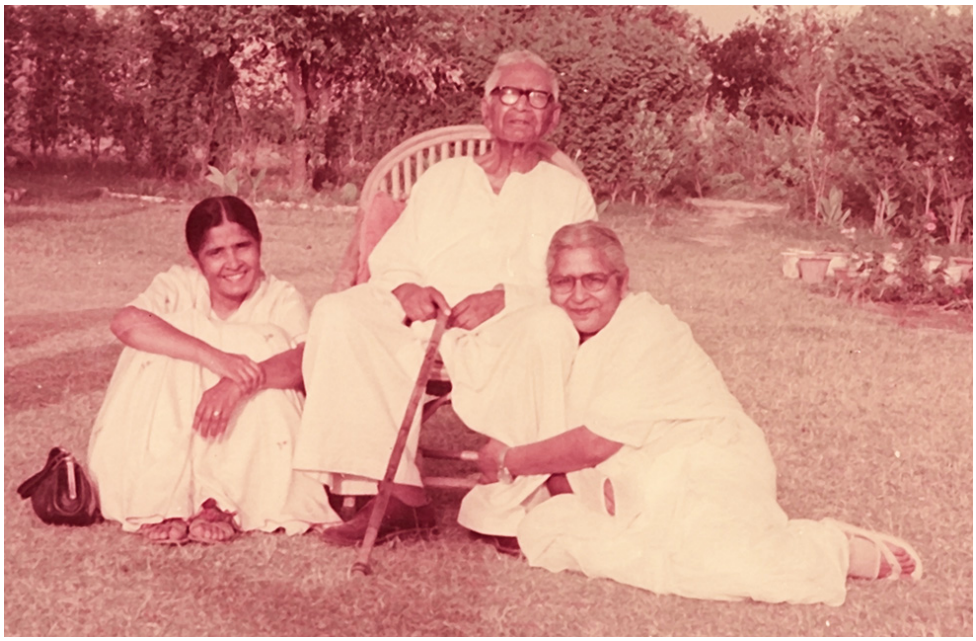

परम पूज्य माँ के साथ पिता जी एवं उनकी बहिन सुश्री निर्मल आनन्द

परम पूज्य माँ के पिता जी, श्री. सी. एल. आनन्द, एक महान शास्त्रज्ञ, विद्वान, उच्चविचारों वाले असाधारण मानसिक शक्ति सम्पन्न व्यक्ति थे। वह बार-एट-लॉ थे और पंजाब विश्वविद्यालय में तीस वर्ष तक लॉ कॉलिज के अध्यक्ष रहे। वह अपनी निजी आध्यात्मिक उन्नति व शास्त्र स्पष्टीकरण के लिये मन्दिर में आकर माँ से प्रश्न पूछते थे। (वह मन्दिर में अपनी ही बेटी को 'माँ' कह पुकारते थे।)

पूछे जाने पर प्रश्नकर्ता के प्रश्न को पूज्य माँ भगवान के चरणों में ज्यों का त्यों धर देते थे और प्रसादवत् उत्तर पूज्य माँ के मुखारविन्द से बह जाता था। यही उनका दिव्य प्रज्ञा प्रवाह है?

पिता जी

आपने कहा है जो स्थूल में होता है, वह रेखा का खेल है और जो मानसिक है वह जीव के हाथ में है। मैंने तो ऐसा समझा था कि मानसिक भी जीव के हाथ नहीं। आप समझाइये कि ठीक बात क्या है।

प्रश्न अर्पण

रेखा जीव के हाथ नहीं, यह तो मैंने मान लिया।
मन भी जीव के हाथ नहीं, मोरा मन यह मान रहा।।१।।

तुम कहो मोरे हाथ है, यह समझ नहीं आता है।
तुम ही यह अब समझाओ, मन रेखा का क्या नाता है।।२।।

तत्व ज्ञान

स्थूल जो हो हो रेखा रचित, पूर्व कर्म जो हो चुके।
नियंत्रित वह जो हो चुके, आरम्भ जीवन में हो चुके।।३।।

बीज जो वहाँ फूट चुके, संरक्षण उनका सत् करे।
निर्माण उनका सत् करे, संहार उनका सत् करे।।४।।

रूप रंग कुल परिस्थिति, रेखा ने ही सब है दी।
पूर्व निर्माणित रेखा पर, जीव की जीवन चल रही।।५।।

मन रेखा रचित ही कहो, जब लौ विवेक वहाँ न हो।
राग द्वेष सों जो उपजे, स्वतः उपजे तो रेखा कहो।।६।।

स्वभाव बँधा त्रैगुण बँधा, जीव जो जग में वर्त रहा।
भ्रम में भ्रमित हुआ हुआ, मदहोश हुआ वह वर्त रहा।।७।।

आभास मात्र को सच माने, धुँधली दृष्टि उसकी है।
अवास्तविकता में भरमाया, अज्ञानपूर्ण वा दृष्टि है।।८।।

जो सुना उस मान लिया, किसी को उसने छुपा लिया।
जो हो पसंद वह ही किया, निज न्यूनता को छुपा लिया।।९।।

अपने में जो गुण माने, न जाने उसमें कोई नहीं।
तमपूर्ण अविवेकी यह, अपने को भी यह जाने नहीं।।१०।।

परिस्थिति में मनो जग को, रची वहीं भरमा गया।
सम्पर्क हुआ प्रतिद्वंद्व हुआ, मनोविकार बना लिया।।११।।

अज्ञान में जब लौ वह बसे, मानसिक उसके हाथ नहीं।
मोह में बसा आँधो है जो, कुछ भी उसके हाथ नहीं।।१२।।

प्रकाश जिस पल हो जाये, साधक आँख तब खोल ले।
यथार्थ सत् जब जान ले, अपना आप तब दीख पड़े।।१३।।

गुण खिलवाड़ वह समझ ले, यह संसार वह समझ ले।
अव्यय तत्व अखण्ड सत्, जग आधार वह समझ ले।।१४।।

जीवन अर्थ ही बदलेगा, मन वश में हो जायेगा।
मन की ही बस बात नहीं, त्रिलोकपति हो जायेगा।।१५।।

मनोलोक वह तनोलोक, फिर बुद्धिलोक पे राज्य करे।
तब ही यह सब हो सके, गर सत् साक्षित्व में मन देखे।।१६।।

रेखा की फिर क्या कहें, वह पीछे पीछे आती है।
भ्रम में उनका मन बसे, पर रेखा चलती जाती है।।१७।।

पूर्वजन्म कर्मफल राह, बीज जो उत्पन्न देख हुआ।
परिस्थिति संग भाव स्वभाव, प्रकृति बधित ही मिला।।१८।।

दर्शन में हर कर्मफल, आधुनिक कर्म का फल लगे।
मन बुद्धि राह एकरूप, मानो रेखा से हो चुके।।१९।।

सत् की ओर जो बढ़ जाये, दीप्यमान जो सत्य हो।
विवेक स्थित हुए भाव परे, स्वभाव भी परिवर्तित हो।।२०।।

पर रेखा में विपरीतता, और अपमान हो भरा हुआ।
सत् ने कुछ भी नहीं किया, फिर भी वह मिल जायेगा।।२१।।

पर मन वश में उनके है, सहज गुण से वह है परे।
प्रतिरूप में विलक्षण मनी, सब देखे और मुसकाये।।२२।।

सद्गुण जिस पल तू चाहे, आँख खुल ही जायेगी।
जो है यथार्थ दिख जाये, जग राज़ भी खुल ही जायेगी।।२३।।

निज मन तव वश में होये, विवशता जग की दिख जाये।
भये गुणातीत वह गुणपति, गुण बधितता जग की दिख जाये।।२४।।

ज्ञान-विज्ञान सहित

सुन ले मना सुन तो ज़रा, साधक रेखा का नाम न ले।
जग जो भी करे रेखा कहे, अपने प्रति वा नाम न ले।।२५।।

जब लौ 'मैं' वहाँ बाक़ी है, कर्तृत्व भाव से भरा हुआ।
रेखा आसरे मन समझ, कौन कहीं पे बढ़ सका।।२६।।

भोक्ता निज को माने हो, क्या भोगो यह देख तो लो।
कर्ता निज को जाने हो, निज कर्म को देख तो लो।।२७।।

'मेरा मन' तो कहते हो, अपने मन को देख तो लो।
जिस बुद्धि का गुमान है, उस बुद्धि को देख तो लो।।२८।।

जब लौ ज्ञान था नहीं हुआ, विचार ही नहीं किया।
गुण गुणन् में वर्ते गये, वहाँ अहं तूने ही भरा।।२९।।

अब जो कुछ कुछ जाग रहे, प्रथम स्थूल रेखा पे तजो।
जग जो भी दे या छीन ले, दोष तू उसपे नहीं मढ़ो।।३०।।

रेखा का अभ्यास मना, प्रथम बाह्य पे तुम करो।
मान अपमान जो भी मिले, रेखा देन उसे समझ लो।।३१।।

जब लौ व्यक्तिगत 'मैं' है, तब लौ कहे 'मैं' कर्ता है।
तब लौ कहें देख तो ले, क्या और क्यों तू कर्ता है।।३२।।

कुछ करना है तो साधना कर, निज आंतर को साध लो।
स्थूल जो है सो हुआ करे, उसको रेखा पे छोड़ दो।।३३।।

गर 'मैं' है तब ही तन मन, बुद्धि चित्त कर्म यह तेरे हैं।
यह अपना आप तुम देख लो, कैसे रूप यह तेरे हैं।।३४।।

आपुनो रूप को देख करी, 'मैं' के प्रहार को थाम लो।
मन बुद्धि चित्त अहंकार, साधक तेरे कर में हो।।३५।।

यह तोरे कोण से कहते हैं, सत् कर्मी अभी हुए नहीं।
अज्ञान आवृत बुद्धि तेरी, अहं बल भी अभी गई नहीं।।३६।।

जब लौ 'मैं' यह बाक़ी है, तन मन कर्म अपनाती है।
तब लौ जानो तुम साधक, आंतर तेरे हाथ ही है।।३७।।

आंतर जग जो मन ने रचा, संग मोह कारण उपजा।
अज्ञान कारण कहो उपजा, हक़ीक़त सा है दीख रहा।।३८।।

सत् का दीप जलाये करी, अहं ही पूजा करता है।
विवेक मशाल यह कर में ले, अज्ञान भस्म वह करता है।।३९।।

'मैं' मम संग और मान्यता, चित्त विकार मिथ्या कह लो।
पर कैसे उनको मिथ्या कहें, जब हर पल आंतर में वह हो।।४०।।

परम कोण से मिथ्या है, जीव कोण से सत् कहो।
ज्ञान ही उसे मिटा सके, चित्त विकार आंतर जो हो।।४१।।

अज्ञान में अज्ञान जम, अज्ञान पोषण जिसका करे।
जिसमें सत्यता है ही नहीं, वास्तविक उसको सिद्ध करे।।४२।।

भ्रम में उत्पन्न कह लो हुई, मनोलोक जो तेरी है।
मोह ही उसकी नींव है, स्वप्न लोकवत् वह ही है।।४३।।

कल्पना आधारित सत् जो, सत् सिद्ध उसे मन करे।
भावना चाह और राग द्वेष, आधार पे यह कर्म करे।।४४।।

जिसकी सत्ता है ही नहीं, जो सत् निज को माने है।
वा की जाई ही जानो, हर राज़ भी उसका जाने है।।४५।।

'मैं' से कहो गर कुछ करना है, तो इस भ्रम को दूर करो।
बुद्धि विवेक बनाये करी, इस मनोलोक को चूर करो।।४६।।

९.१.१९६७

❖ ❖ ❖

सत्संग किसे कहते हैं!

पूज्य माँ के सत्संग पर आधारित

सत्संग का अर्थ है सत् से संग! संग मन का सहज गुण है.. उसे जो पसन्द आ जाये, चाहे जग हो या राम.. वहाँ वह संग कर लेता है। अब प्रश्न उठता है कि संग क्या है? मन के अनुराग को ही संग कहते हैं। जहाँ संग हो जाये, उसे अपनाने की चाहना स्वतः ही उत्पन्न हो जाती है।

मन के संग के कारण ही जीव विभिन्न विषयों के अथवा सत् के तद्रूप हो जाता है। यह संग ही दूसरे के साथ सजातीयता उत्पन्न करता है तथा दूसरे के गुणों से जीव की मैत्री करवाता है।

संग ही मन को अपने संग वाले विषय के ध्यान में बाँधता है और उस ध्यान के परिणाम रूप संग ही सहयोगिता उत्पन्न करता है और मन को विषयों की ओर प्रेरित करता है। यह संग जब विषयों से हो तो वह आसक्ति कहलाता है और इस ही मन का संग जब सत् से हो जाये तो भक्ति कहलाता है।

जहाँ मन का संग होगा, उसी के गुण उसके अपने आंतर में आने लगगे। यदि सत् से संग हो गया तो ज्ञान का वर्द्धन होने लगेगा और यदि असत् से संग हो गया.. विषयों से

संग हो गया.. तो अज्ञान बढ़ जायेगा। इसी लिए जब सत् से संग होगा तो जीवन में प्रकाश आ जायेगा और यदि विषयों से संग हुआ तो अंधकार छा जायेगा।

भगवान श्री कृष्ण ने भी गीता में इसके विषय में अर्जुन को सचेत किया-

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। २/६१

ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।। २/६२

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।। २/६३

अर्थात् -

सम्पूर्ण इन्द्रियों को संयम में लाकर,
एकाग्र चित्त करके,
मेरे परायण हो जा;
क्योंकि जिसकी इन्द्रियाँ वश में होती हैं,
उसकी बुद्धि प्रतिष्ठित होती है।

एवं दूसरी ओर,

विषयों को ध्याते हुए,
पुरुषों का संग उन विषयों में उत्पन्न हो जाता है,
संग से काम उत्पन्न हो जाता है,
और कामना से क्रोध उत्पन्न होता है।

और साथ ही साथ,

क्रोध से सम्मोह उत्पन्न होता है,
सम्मोह से स्मरण शक्ति विभ्रान्त हो जाती है,
स्मृति के विभ्रान्त हो जाने से बुद्धि नष्ट हो जाती है
और बुद्धि के नाश होने से जीव स्वयं नष्ट हो जाता है।

सत् का संग पावनता की ओर ले जाता है, वह तो हमें निष्काम कर्म की ओर ले जायेगा। विषयों से संग हमें कामना की ओर प्रेरित करेगा। सत् के संग से आंतरिक वातावरण शुद्ध और पावन होगा और विपरीतता में भी हमारे आंतर से दैवी गुण ही बह जायेगें। परन्तु जब विषयों से संग होगा तो आसुरी गुण बढ़ने आरम्भ हो जायेंगे।

सत् से संग हमारी प्रवृत्ति देने की ओर बढ़ाता है और इसी में ही प्रसन्नता मिलती है। यदि विषयों का संग हो तो लोभ बढ़ जाता है और हम अपना हाथ रोक कर अपने

लिए ही विषय एकत्रित करना आरम्भ कर देते हैं। सत् से संग का सहज परिणाम तप तथा सेवा है। इसके विपरीत विषयों से संग हमें निर्दयी तथा स्वार्थी बना देता है।

सत् से संग के कारण हम विनम्र व झुकावपूर्ण बन जाते हैं और अहंकार रहित और दम्भरहित हो जाते हैं। विषयों के संग के परिणाम रूप अभिमान व अत्याचार का वर्द्धन होने लगता है। यदि सत् से संग हो जाये तो वह मुक्तिप्रद बन जाता है और असत् से संग हो जाये तो वह बंधनकारक बन जाता है।

सम्पूर्ण शास्त्र ज्ञान का प्रयोजन केवल सत् की झलक दिखाकर.. हमारे मन का उस सत् से संग जागृत करना है। ज्ञान का प्रवचन व श्रवण भी केवल सत् से संग उत्पन्न करने के लिए ही निमित मात्र है।

संत समागम, साधुओं से मेल-जोल भी सत् से संग में ही सहायक सिद्ध होता है। केवलमात्र साधुओं से प्रवचन सुनना, शास्त्र श्रवण, पठन व अध्ययन सत्संग नहीं! ये तो विधि मात्र हैं सत् से संग उत्पन्न करने के! मन का सत् से संग हो जाना ही सत्संग है। इसी प्रकार केवल कीर्तन सुनना और भजन करना सत्संग नहीं; बल्कि मन का उस भाव में रंग जाना और उसको जीवन में धारण करना ही सत्संग है।

केवल हरि गुणगान ही सत्संग नहीं है। उन भगवद् गुणों का अपने जीवन में अभ्यास करना सत्संग का चिन्ह है। इसी प्रकार ज्ञान की बातें सुनकर उनमें जीव की रुचि हो जाना सत्संग का चिन्ह नहीं है। यदि इस सुने हुए ज्ञान के तत्व सार को जीवन में उतारने लग जायें तो उसे सत्संग मानिये। यदि सत् से संग हो गया तो उसी ज्ञान को सुनते सुनते हम ज्ञान की प्रतिमा बनते जायेंगे और भगवान के हर वाक् को अपने जीवन राही सप्राण करते जायेंगे।

हमारी साधना की सफलता सत् से संग की तीव्रता पर ही आधारित है।

हमारा जीवन ही प्रमाणित करेगा कि हमें सत्यता से कितना प्यार है अथवा कितना प्रगाढ़ संग है। सत् से यह संग ही श्रद्धा को जन्म देता है तथा उस सत् को जीवन में लाने की क्षमता उत्पन्न करता है। यही मन में सहिष्णुता लाता है तथा जीवन को तपमय बनाता है। यह तपपूर्ण जीवन ही यज्ञमय बन जाता है और हमें तनत्व भाव से मुक्त करके आत्मा में लीन कर देता है।

सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने का केवलमात्र उद्देश्य हमारे सत् से संग को दृढ़ीभूत करना है। जब आंतरिक संग सत् से हो जाता है तो आंतर से स्वतः ही ज्ञान प्रवाहित होने लगता है.. फिर बाह्य ज्ञान के सहयोग की आवश्यकता नहीं रहती।

सत् से अटूट संग ही हमारे जीवन को ज्ञान की प्रतिमा बना देता है।

❖ ❖ ❖

आप माँ से मिले जीवन में प्यार के कुछ कण..
इतने अनमोल हैं जो कभी नहीं भूलते!

श्रीमती पम्मी महता

जी हाँ, सच ही नहीं भूलते.. भूलने चाहिये भी नहीं.. क्योंकि ऐसे पल बहुत ही अनमोल होते हैं, जिनका कोई मोल नहीं होता; इसीलिए ही तो बेमोल होते हैं! यह श्री हरि माँ प्रभु जी की ईश्वरीय देन ही है.. आप परम वन्दनीय परम पूज्य श्री हरि माँ की करुण-कृपा का दिव्य व अनुपम प्रसाद!

आप सभी के साथ बाँट कर ही आप श्री हरि माँ के प्रति अपना आभार प्रकट कर पाऊँगी। सच माँ, आपकी हर देन बाँट कर ही तो आंतर-बाहर विस्तार पाती है.. इसकी पावनता इसी में निहित है।

आपके जीवन की अभिव्यक्ति आपकी वाणी में समाई हुई है! पता नहीं था मुझे कि मेरी ज़िन्दगी इस क़दर सुहानी हो जायेगी मेरे लिये.. इसने मुझे रुला सा तो दिया.. पर इस हृदय का छलक आना बहुत ही सहज व स्वभाविक ही था। आपका कहा भुलाया ही नहीं जा सकता.. आप माँ ने बड़े ही प्यार से जो कहा! इन्हीं उदगारों में आपके अनन्त प्यार की पूँजी ही तो पा गई। आपने तो प्यार की दौलत ही मुझ पर लुटा दी.. आपके हृदय से छलकते उस प्यार ने तो जानो मेरे हृदय-दामन को भरपूर ही कर दिया।

आप स्वयं इसके साक्षी हैं.. कैसे व कितने प्यार से उड़ेल दिया इस हृदय में.. धन्य धन्य हो गई मैं! आप ही का प्यार आप ही के क़दमों में जैसे परवान चढ़ गया, जिसे मेरे दिल में आपने सदा बहाया है। बहुत ही प्यारा प्यार है आपका, जिसे आपने स्वयं बाअसर कर दिया आज! बहुत ही प्यार व आदर सहित तथा असीम श्रद्धा भक्ति से आपसे पाया आप ही के श्री चरणन् में धरती हूँ!

धन्य धन्य हो गई यह कनीज़ आपकी, जो आप ही से अपने साईं रब के दिल के क़रीब हो गई हूँ। इतना बड़ा गौरव.. आप ही के अदब में व आपके क़दमों का सदक़ा.. एक चाकर को अपने मालिक से मिल जाये तो उसे समझ ही नहीं आता.. आपकी अनमोल देन, आप श्री हरि माँ से पाई पूँजी जो अनायास ही आपने इस ग़रीब की झोली में डाल दी! आज आंतर की दरिद्रता व निर्धनता को निकाल इसे अपनी अनमोल प्यार की धरोहर से नवाज़ दिया!

हे मोरी मैय्या, आपका कोटि कोटि धन्यवाद करते हुए पुनः पुनः करती ही रहूँ.. यही मेरी अर्ज़ है आपसे! हे कृपालु-दयालु नाथ इसे अपने दिल के क़रीब सदा सदा के लिये रखे रहियेगा। क्या बताऊँ आपको कि किस क़दर आपने अपनी कनीज़ को नवाज़ दिया है.. सच ही सनाथ हो गई हूँ माँ! हृदय छलक छलक आता है.. इन्हीं आँसुओं से आप माँ के चरण पखारी पखारी धन्य धन्य हो रही हूँ। कैसी अनमोल धरोहर दी है आप ग़रीबनवाज़ ने, इस ग़रीब को!

कैसी सुन्दर घड़ी है यह मेरे लिए, जो आपकी असीम करुण-कृपा का कृपापूर्ण प्रसाद देई करी मुझे अनुगृहित कर गई! आपके हृदय से लगे रहने का यह दिव्य प्रसाद मुझे हर हाल व हर परिस्थिति में से गुज़ार लेगा.. आपका यह मूक संदेश भी साथ साथ पा गई हूँ! मेरा चित्त, मेरे क़दम आप ही में स्थिर रहें, जो अब बहकें नहीं! आपका ऐसा अनमोल आश्वासन भी मेरे हृदय-आँचल में आपने भर दिया।

कहते हैं न माँ, कि डूबते को तिनके का सहारा भी बहुत होता है.. यहाँ तो आप करुणानिधि व कृपालु-दयालु नाथ स्वयं खड़े हैं, जिन्होंने इसे हृदय से लगाकर अपने अंग-संग रहने का आशीर्वाद मुझे दे दिया! आप माँ प्रभु ने तो 'मैं' के सभी भाव, जो नासूर बने हुये थे, अपने प्यार से नहला कर सभी कुछ आंतर से बहा बाहर कर दिया हमेशा के लिए!

वाह सद्गुरु जी वाह! सच कहा है ग्रंथों में कि भगवान जब सद्गुरु वेश में आते हैं तो अपने पास कुछ भी बचा कर नहीं रखते.. अपने समेत अपना सभी कुछ दे देते हैं। हे श्री हरि माँ आपने तो कृपा करी इसका प्रमाण भी दे दिया! हे श्री हरि सद्गुरु माँ, आपको पा कर आपकी कनीज़ धन्य धन्य हो गई।

आपने तो माँ पात्र-कुपात्र कुछ भी कहीं नहीं देखा। बस, आपका नज़रेकरम क्या मिला.. आपकी मेहरबानियों का तो जैसे अंबार ही मिल गया। ईश्वर करे, आप से पाई इस धरोहर को सदैव जीवन में बाँटती रहूँ व आपके जगती रूपा श्री चरणन् में धरती रहूँ.. जो आप माँ का आशीर्वाद सभी को प्राप्त हुआ रहे! यही तहेदिल से दुआ है मेरी आपसे!

हे माँ, आपकी इतनी उम्रदराज़ हो मुझमें कि आपकी यह अनमोल धरोहर प्यार की, युगों-युगों तक बरसती ही रहे.. इस आपके अपनाये हृदय से! सदा मंगल ही मंगल व शुभ की कामना करती रहती हूँ। भगवद्-कृपा यूँ ही कृपापूर्ण रहे व आप ही के अंग-संग रहने का जो परम सौभाग्य पाया है वह सदा स्थायी हो कर रहे मुझमें.. जो आप ही आपकी हुई रहूँ! आमीन.

परम पूज्य माँ के साथ डॉ. रमेश महता

मेरे हृदय से निकले यह श्रद्धा-सुमन असीम कृतज्ञता से आप ही के श्री हरि चरणन् में धरती हूँ और आपकी चरण-रज सीस चढ़ाती हूँ।

धन्य भाग्य मेरे जो परमपिता परमात्मा, श्री हरि जगद् जननी माँ वेश में आये करी, मुझे मुझी से उठा कर अपने में समाने को ले आये हैं, अपनी ही आग़ोश में समेट कर!

यह प्यार के कण नहीं, यह तो प्यार का वह समंदर है.. जो आप माँ ने इस हृदय गागर में भर दिया! है न कितना बड़ा अजूबा.. जो हैरतज़दा कर देता है.. आश्चर्यचकित हुई निहारती रहती हूँ अपने साईं रब को और पूर्णतया नतः हो जाती हूँ श्री हरि चरणन् पर।

हे माँ असीम श्रद्धा भक्ति से दुआ करती हूँ आपकी हर देन को हृदय में सँजोये रहूँ.. जब तक आप ही आपके श्री चरणन् पे सदा-सदा के लिये मिट नहीं जाती! आप माँ के आशीर्वाद मेरे लिए बहुत ही अनमोल हैं! प्रभु माँ आपका हाथ मेरे सर पे सदा सलामत रहे! आप सलामत रहें! आपसे आप ही में हे माँ सुरक्षित रहूँ! आमीन.

हरि ॐ ❖

परम पूज्य माँ

अर्पणा

समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
जून २०१९

अर्पणा आश्रम आयोजन

सामूहिक स्मरणोत्सव

९ मार्च को अर्पणा परिवार 'साधना दिवस' मनाने के लिए एकत्रित हुआ, जहाँ परम पूज्य माँ को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। ९ मार्च १९५७ को परम पूज्य माँ की भक्तिपूर्ण यात्रा प्रारम्भ हुई थी, जो आध्यात्मिक पथ पर चलने वालों के लिए एक अमूल्य मार्गदर्शक है।

उन्होंने बताया, "हृदय की पावनता सभी के अनुरूप हो कर निष्काम कर्म करने के निरन्तर अभ्यास से आती है।"

अर्पणा के मन्दिर में परम पूज्य माँ के साथ बिताये स्मरणीय अनमोल लम्हे

१६ अप्रैल को 'महा समाधि दिवस' मनाया गया। उस दिव्य आत्मा के शब्द आज भी हमारे हृदयों में गुँजायमान होते हैं और हमें नित्य निरन्तर आनन्द की ओर अग्रसर होने को प्रेरित करते हैं।

१० मई को परिवार के सभी सदस्य पूज्य छोटे माँ को श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित हुए, जिनके अथक प्रयासों द्वारा ही 'उर्वशी' रूपा दिव्य कोष लिखा गया, जो युगों युगों तक सभी के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहेगा। उनका असीम विश्वास एवं प्रेम हम सब का मार्गदर्शन करता रहेगा।

ई-२२ डिफेंस कॉलोनी के मन्दिर में अध्ययन सत्र

प्रत्येक बुधवार को सुबह ११ बजे से ई-२२ डिफेंस कॉलोनी के अर्पणा मन्दिर में अध्ययन सत्र आयोजित किये जाते हैं।

वर्तमान में '**श्रीमद्भगवद्गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन**' का अध्ययन किया जा रहा है, जो दिनचर्या में आनन्दपूर्वक जीने के लिए अनमोल रहस्यों का एक खज़ाना है। इसके बाद परम पूज्य माँ द्वारा विस्तृत, व्यावहारिक ज्ञान से परिपूर्ण, अन्य शास्त्रों का भी अध्ययन किया जायेगा।

सभी इच्छुक लोगों का यहाँ आने के लिए स्वागत है।

दिल्ली के कार्यक्रम

अर्पणा मोलरबंद - सीबीएसई बोर्ड परिणाम २०१९

८० % से ऊपर अंक लेने वाले ११ छात्र, अर्पणा के स्वयंसेवकों एवं स्टाफ़ के साथ

अर्पणा शिक्षा केन्द्र के ४२ छात्रों की २०१९ की बोर्ड परीक्षा के परिणाम २ मई को घोषित किये गये जो इस प्रकार रहे -

८९ % के साथ प्रथम कंचन,
८८.८% के साथ द्वितीय आरती,
८८ % के साथ तृतीय साक्षी
इनके अतिरिक्त

८० % से ऊपर	११ छात्र
७०-८० %	१७ छात्र
६०-७० %	१० छात्र
५०-६० %	४ छात्र

मनीष कुमार

मोलरबंद में शिक्षा केन्द्र में आने के बाद मनीष का तो मानो जीवन ही बदल गया.. वह एक औसत छात्र हुआ करता था।

सीबीएसई परीक्षा में ८९ % लेने के बाद, अर्पणा ने ३ वर्ष तक दामला के 'सेठ जय प्रकाश पॉलिटेक्निक' से सूचना प्रौद्योगिकी में डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए उसकी शिक्षा का भार उठाया। वह अब आईओएस (IOS) डेवल्पर के रूप में २०,०००/- रुपये का वेतन प्रतिमाह अर्जित कर रहा है।

अर्पणा अपने शैक्षिक कार्यक्रमों में सहायता करने के लिए अवीवा पीएलसी, यूके, एस्सेल फाउंडेशन, नई दिल्ली, टेक्निप इंडिया, केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रन, यूएसए एवं अर्पणा कनाडा का अत्यन्त आभारी है।

अर्पणा के 'रिजॉयस' केन्द्र में छात्रवृत्ति कार्यक्रम

१७ अप्रैल को अलग-अलग विषयों में उपलब्धि प्राप्त किये हुए मेधावी छात्रों को सम्मानित करने के लिए एक छात्रवृत्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सम्मानित अतिथियों ने ४० छात्रवृत्तियों के साथ साथ कला के लिए २० पुरस्कार, ४ कंप्यूटर कौशल के लिए एवं १९ विविध पुरस्कार - कुल ८३ पुरस्कार दिये।

सीसिलिया, एक माँ है जो घरेलू सहायक के रूप में काम करती है, उन्होंने अर्पणा के स्पोकन इंग्लिश प्रोग्राम के बारे में अंग्रेज़ी में बात की और बताया कि लगभग ५ महीने तक उन्होंने इसे अटैंड किया। उन्हें विश्वास है कि अपनी अंग्रेज़ी में बोलचाल की योग्यता से अब उन्हें अच्छी नौकरी मिल सकती है।

हरियाणा समाचार

'नगला मेघा' गाँव की गीता को घरेलू हिंसा के खिलाफ अर्पणा के स्वयं सहायता समूह से कानूनी सहायता एवं सुरक्षा प्रदान की गई

महिला सशक्तिकरण का जश्न

अर्पणा के स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा 'चौरा' एवं 'नगला मेघा' गाँवों में 'महिला दिवस' मनाने के लिए २ ग्रामीण मेलों की व्यवस्था की गई।

८५६ स्वयं सहायता समूहों में से १२,०३८ महिलाओं को अर्पणा द्वारा सम्मानित किया गया, इसी उपलक्ष्य में जश्न मनाया गया।

७५ % महिलाएँ अब फैसले लेने में भाग लेती हैं!

९१ % स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं की आय में वृद्धि हुई!

३१ % से अधिक महिलाओं की आय तो दोगुनी हो गई है!

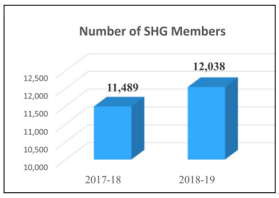

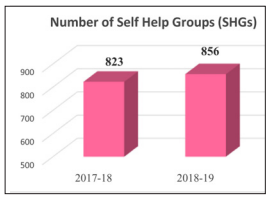

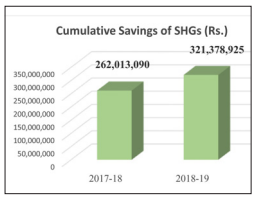

ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के अनुदान के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन एवं इन्टरनैशनल डिज़ास्टर एण्ड रिलीफ़ फण्ड (IDRF), **यूएसए, को हमारी गहरी कृतज्ञता!**

अर्पणा अस्पताल

हरियाणा सरकार द्वारा अर्पणा अस्पताल को सरकारी पैनल पर लाया गया

हरियाणा सरकार द्वारा अर्पणा अस्पताल को सरकारी पैनल पर ला कर सशक्त बनाया गया है जिससे अब हरियाणा सरकार के सभी कर्मचारी अर्पणा चिकित्सा सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। इससे अस्पताल में रोगियों की संख्या में वृद्धि हुई है।

दूरदराज़ क्षेत्रों में नेत्र शिविर

फरवरी, मार्च एवं अप्रैल २०१९ में अर्पणा द्वारा कई निःशुल्क नेत्र शिविर आयोजित किये गये -

समालखा नेत्र शिविर -

९९३ रोगियों की जाँच की गई।

पानीपत नेत्र शिविर -

४०१ रोगियों की जाँच की गई।

१४९ रोगियों की अर्पणा अस्पताल में निःशुल्क/ कम दरों पर सर्जरी की गई।

आय सृजन में वृद्धि

हिमाचल प्रदेश में विक्रमा देवी

गाँव लोधी में अत्यन्त ग़रीबी की हालत में विक्रमा देवी रहा करती थी। वह २०१४ में अर्पणा द्वारा चलाए गए 'शारदा स्वयं सहायता समूह' की सदस्य बन गई। जुलाई २०१७ में विक्रमा देवी ने २ गाय ख़रीदने के लिए ४०,०००/- का ऋण लिया।

विक्रमा देवी कहती हैं, 'अब हम दूध बेच कर १०,०००/- से १२०००/- रुपये तक प्रतिमाह कमा लेते हैं।

हमारे परिवार को, वर्षों के बाद, ग़रीबी के दैनिक दबाव से राहत मिली है।' मुसकुराते हुए वह बताती हैं, "हमारे बच्चों का स्वास्थ्य अब पहले से बेहतर है और वे स्कूल भी जाते हैं। और अब हम उनकी अच्छी देखभाल भी कर पा रहे हैं।"

हिमाचल में विकास कार्यक्रमों में समर्थन देने के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन, के प्रति अर्पणा हार्दिक आभारी है।

अर्पणा द्वारा चण्डीगढ़ में प्रदर्शनी एवं बिक्री

चण्डीगढ़ में १४-१६ मार्च २०१९ को अर्पणा द्वारा प्रदर्शनी एवं बिक्री का आयोजन किया गया जिससे वंचित महिलाएँ लाभान्वित होती हैं। इनका प्रशिक्षण भी अर्पणा द्वारा ही किया जाता है। यहाँ पर सभी लोग ग्रामीण महिलाओं द्वारा बनाई गई सुन्दर वस्तुओं से अति प्रसन्न हुए और बहुत उत्सुकता के साथ उन्होंने अपने घरों एवं दोस्तों और परिवारों के लिए जम कर ख़रीदारी की।

We, at Arpana, depend on your support for our programs

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.
FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002
Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:

Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037
Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:

Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037
Send contributions in USA to:

Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852
Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249
Send contributions to Arpana Canada:

c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada
Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.
Information & Resources Office: 91-184-2390905 **Executive Director:** 91-9818600644
emails: **at@arpana.org and arct@arpana.org**

Contact person: Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9991687310
Websites: **www.arpana.org** **www.arpanaservices.org**

Arpana Ashram

Research

Publications & CDs

Arpana endeavours to share its treasure of inspiration – the life, words and precept of *Pujya Ma*, through the publication of books and cassettes.

Publications

श्रीमद्भगवद्गीता	
भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन	Rs.300
कठोपनिषद् (हिन्दी)	Rs.120
श्वेताश्वतरोपनिषद्	Rs.400
केनोपनिषद्	Rs.36
माण्डूक्योपनिषद्	Rs.25
ईशावास्योपनिषद्	Rs.20
प्रश्नोपनिषद्	Rs.50
गंगा श्रद्धा प्राणप्रद	Rs.40
प्रज्ञा प्रतिभा	Rs.30
ज्ञान विज्ञान विवेक	Rs.60
मृत्यु से अमृत की ओर	Rs.36
जपु जी साहिब	Rs.70
अर्पणा भजनावली	Rs.80
वैदिक विवाह	Rs.24
गायत्री महामन्त्र	Rs.20
नाम	Rs.15
अमृत कण	Rs.12

Lets Play the Game of Love	Rs. 400
Bhagavad Gita	Rs.450
Kathopanishad	Rs.120
Ish Upanishad	Rs.70
Prayer	Rs.25
Love	Rs.20
Words of the Spirit	Rs.12
Notes	Rs.10

Bhajan CDs

ईशावास्योपनिषद् (a deluxe 8 CD set)	Rs.2000
स्वरांजलि - भाग १ और २	Rs.175each
नमो नमो	Rs.175
उर्वशी भजन	Rs.175
हे राम तुझे मैं कहती हूँ	Rs.75
गंगा (भाग १ और २)	Rs.75each
राम आवाहन	Rs.75
तुमसे प्रीत लगी हे श्याम	Rs.75
हे श्याम तूने बंसी बजा	Rs.75

For ordering of books, please address M.O./DD to: **Arpana Publications** (payable at Karnal). Kindly add Rs. 25 to books priced below Rs. 100 & Rs. 40 to books above Rs. 100 as postal charges

Arpana Pushpanjali

Hindi/English Quarterly Magazine

Subscription	**Annual**	**3yrs**	**5yrs**
India	130	375	600
Abroad	350	1000	1650

Advertisement	**Single**	**Four**
Special Insertion (Art Paper)	10,000	
Colour Page	3500	12,000
Full Page (b&w)	2000	6000
Half Page (b&w)	1200	4000

(Amounts are in Rupees)

Subscription drafts to be addressed to: **Arpana Trust (Pushpanjali & Publications)**

Delhi Contact Person:
Mrs. Neeta Tandon
E-22 Defence Colony,
New Delhi 110024
Tel: 98712-84847

Donation cheques to be addressed to: Arpana Trust

Arpana Trust *- Donations for Spiritual Guidance Activities, Publications, Scholarships and Delhi Slum Project. Regd. under FCRA (Regd, number 172310001) to receive overseas donations.*

Applied Research

Medical Services

In Haryana
- 130 bedded rural Hospital
- Maternity & Child Care
- Family Planning
- Eye Screening Camps
- Specialist Clinics
- Continuing Medical Education

In Himachal
- Medical & Diagnostic Centre
- Integrated Medical & Socio-Economic Centre

In Delhi Slums
- Health care to 50,000
- Immunisations
- Antenatal Care
- Ambulance

Women's Empowerment

Capacity Building
- Entrepreneurial activities
- Local Governance
- Micro-Planning
- Legal literacy

Self Help Groups
- Savings
- Micro credit
- Federation
- Community Health
- Exposure Visits

Gender Sensitization

Income Generation through Handicraft Training Skills

Child Enhancement

Education
- Children's Education
- Vocational Education
- Cultural Opportunities
- Day Care Centres
- Pre-school Care & Education

Health
- Nutrition Programme
- School Health Programme

In Delhi Slums
- Environment, Building Parks & Planting trees
- Housing Project
- Waste Management

Arpana Research and Charities Trust *Exempt U/S 80 G (50% deduction) on donations for the hospital & Rural Health Programmes. Regd. under FCRA (Regd. number 172310002) to receive overseas donations.*

Contact for Questions, Suggestions and Donations:

Mr. Harishwar Dayal, Executive Director, Arpana Group of Trusts, Madhuban, Karnal - 132037, Haryana.
Tel: (0184) 2380801- 802, 2380980 Fax: 2380810 Email: at@arpana.org / Web site: www.arpana.org

All donation cheques/ DD to be addressed to : ARPANA TRUST